गढ़वाली लोक साहित्य में लोकजीवन और परंपराओं का चित्रण

अनुज बरमोला[1], डॉ. राममनोहर उपाध्याय[2]

[1]शोध छात्र पी.एच.डी हिन्दी विभाग

[2]प्राध्यापक शोध निर्देशक हिन्दी विभाग

मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय सीहोर मध्य प्रदेश

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19648190

शोध सार

भारतीय लोक साहित्य देश की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक संरचना तथा लोकजीवन का जीवंत दस्तावेज माना जाता है। उत्तराखंड के पर्वतीय अंचल में विकसित गढ़वाली लोक साहित्य भी इसी समृद्ध लोकपरंपरा का महत्वपूर्ण अंग है। गढ़वाली लोक साहित्य में पर्वतीय समाज के जीवन-संघर्ष, लोकविश्वास, रीति-रिवाज, धार्मिक आस्थाएँ, प्रकृति-प्रेम तथा सांस्कृतिक परंपराओं का अत्यंत सजीव और मार्मिक चित्रण मिलता है। यह साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि लोकमानस की अनुभूतियों, सामाजिक संबंधों तथा सांस्कृतिक मूल्यों का संवाहक भी है।

गढ़वाली लोक साहित्य में लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, कहावतें, मुहावरे तथा लोकनाट्य जैसी विधाओं के माध्यम से जनजीवन की विविध स्थितियों को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। पर्वतीय जीवन की कठिनाइयाँ, कृषि-प्रधान संस्कृति, सामूहिक जीवन-पद्धति, विवाह-संस्कार, उत्सव, देवी-देवताओं में आस्था तथा स्त्री-जीवन की संवेदनाएँ इस साहित्य के प्रमुख विषय हैं। गढ़वाली लोकगीतों में विरह, प्रेम, श्रम और प्रकृति का अद्‌भुत सामंजस्य दिखाई देता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में गढ़वाली लोक साहित्य में चित्रित लोकजीवन और परंपराओं का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गढ़वाली लोक साहित्य उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान और लोकचेतना का महत्वपूर्ण आधार है। यह साहित्य लोकसंस्कृति की निरंतरता को बनाए रखने के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बीज शब्द : गढ़वाली लोक साहित्य, लोकजीवन, लोकसंस्कृति, लोकगीत, परंपरा, उत्तराखंड

प्रस्तावना

भारतीय साहित्यिक परंपरा में लोक साहित्य का विशेष महत्व रहा है। लोक साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक स्मृति, सामाजिक संरचना तथा जीवन-मूल्यों का दर्पण माना जाता है। यह साहित्य लोकमानस

की अनुभूतियों, विश्वासों और परंपराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित करता है। उत्तराखंड का गढ़वाल क्षेत्र अपनी विशिष्ट लोकसंस्कृति, लोकभाषा तथा सांस्कृतिक परंपराओं के कारण भारतीय लोकजीवन में विशेष स्थान रखता है। गढ़वाली लोक साहित्य इसी समृद्ध लोकपरंपरा की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है।

गढ़वाली लोक साहित्य में पर्वतीय जीवन की कठिनाइयों, प्राकृतिक परिवेश, धार्मिक आस्थाओं तथा सामाजिक संबंधों का अत्यंत जीवंत चित्रण मिलता है। यहाँ का लोकजीवन प्रकृति से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। पर्वत, नदियाँ, जंगल, ऋतुएँ तथा कृषि-प्रधान जीवन इस साहित्य के प्रमुख आधार हैं। लोकगीतों, लोककथाओं तथा लोकगाथाओं में लोकजीवन की संवेदनाएँ, संघर्ष और सामूहिक चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

गढ़वाली लोक साहित्य केवल मौखिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक चेतना का संवाहक भी है। इसमें विवाह-संस्कार, जन्मोत्सव, धार्मिक अनुष्ठान, मेलों तथा पर्वों का विस्तृत चित्रण मिलता है। लोक साहित्य के माध्यम से समाज अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षित रखता है।

आधुनिक समय में वैश्वीकरण और नगरीकरण के प्रभाव के कारण लोकसंस्कृति और लोकभाषाओं के सामने अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। ऐसे समय में गढ़वाली लोक साहित्य का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यह साहित्य पर्वतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने का कार्य करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य गढ़वाली लोक साहित्य में चित्रित लोकजीवन और परंपराओं का विश्लेषण करना है। साथ ही यह अध्ययन यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि गढ़वाली लोक साहित्य उत्तराखंड की सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक जीवन को किस प्रकार अभिव्यक्त करता है।

गढ़वाली लोक साहित्य की परंपरा

गढ़वाली लोक साहित्य की परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है। यह साहित्य मुख्य रूप से मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचारित होता रहा है। लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, जागर, पांडव नृत्य तथा लोकनाट्य इसकी प्रमुख विधाएँ हैं। गढ़वाली समाज में लोक साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि सामाजिक शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम भी है।

गढ़वाली लोक साहित्य में धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना का विशेष महत्व दिखाई देता है। देवी-देवताओं की स्तुतियाँ, लोकदेवताओं की कथाएँ तथा धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े गीत लोकमानस की आस्था को

अभिव्यक्त करते हैं। जागर परंपरा गढ़वाली लोकसंस्कृति की विशिष्ट पहचान है। जागरों में लोकदेवताओं और पूर्वजों का स्मरण करते हुए सामूहिक रूप से लोकगायन किया जाता है।

गढ़वाली लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सहजता और लोकजीवन से निकटता है। इसमें कृत्रिमता का अभाव दिखाई देता है। लोकभाषा में रचित होने के कारण यह साहित्य सीधे जनमानस से जुड़ा हुआ है। लोकगीतों में पर्वतीय जीवन की सरलता, श्रमशीलता और प्रकृति-प्रेम का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है।

डॉ. गोविंद चातक के अनुसार गढ़वाली लोक साहित्य उत्तराखंड की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है।[1] इसी प्रकार डॉ. शिवानंद नौटियाल ने लोक साहित्य को पर्वतीय समाज की सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण स्रोत माना है।[2]

गढ़वाली लोक साहित्य में लोकजीवन का चित्रण

गढ़वाली लोक साहित्य में लोकजीवन का अत्यंत व्यापक और यथार्थ चित्रण मिलता है। पर्वतीय समाज का दैनिक जीवन, उसकी कठिनाइयाँ, श्रमशीलता तथा सामूहिक जीवन-पद्धति इस साहित्य के प्रमुख विषय हैं। गढ़वाल का जीवन प्राकृतिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित रहा है। कठिन पर्वतीय भूगोल, सीमित संसाधन तथा कृषि-प्रधान जीवन ने यहाँ के लोकजीवन को विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है।

लोकगीतों और लोककथाओं में पर्वतीय समाज के संघर्षपूर्ण जीवन का सजीव चित्रण मिलता है। यहाँ के लोग कठिन परिस्थितियों में भी श्रम, सहयोग और सामूहिकता की भावना के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। खेतों में कार्य करती स्त्रियाँ, पशुपालन में लगे परिवार, दूरस्थ क्षेत्रों की यात्राएँ तथा प्राकृतिक आपदाओं से संघर्ष लोक साहित्य में प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं।

गढ़वाली लोक साहित्य में प्रवास की समस्या भी अत्यंत मार्मिक रूप में चित्रित हुई है। रोजगार और आजीविका की खोज में पुरुषों का घर से दूर जाना पर्वतीय समाज की एक बड़ी समस्या रही है। लोकगीतों में विरहिणी स्त्री की पीड़ा, प्रतीक्षा और अकेलापन अत्यंत संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। यह लोकजीवन की वास्तविक परिस्थितियों का सजीव चित्रण है।

लोक साहित्य में सामूहिक जीवन की भावना भी स्पष्ट दिखाई देती है। पर्वतीय समाज में पारस्परिक सहयोग और सामाजिक एकता को अत्यंत महत्व दिया जाता है। विवाह, उत्सव तथा धार्मिक अनुष्ठानों में

[1] गोविंद चातक, गढ़वाली लोक साहित्य, पृष्ठ 84।

[2] शिवानंद नौटियाल, उत्तराखंड की लोकसंस्कृति, पृष्ठ 102।

पूरा गाँव सामूहिक रूप से भाग लेता है। लोक साहित्य इन सामाजिक संबंधों और सामुदायिक चेतना को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

डॉ. मोहन उप्रेती के अनुसार गढ़वाली लोकगीतों में पर्वतीय समाज की आत्मा बोलती है।[3] इससे स्पष्ट होता है कि लोक साहित्य लोकजीवन की वास्तविक अभिव्यक्ति है।

लोकगीतों में परंपराओं का चित्रण

गढ़वाली लोकगीत लोकजीवन और परंपराओं के महत्वपूर्ण वाहक हैं। इन गीतों में समाज की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक विश्वास, पारिवारिक संबंध तथा सामाजिक मूल्य अभिव्यक्त होते हैं। जन्म, विवाह, पर्व-त्योहार, कृषि कार्य तथा धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े गीत गढ़वाली लोकसंस्कृति की विशेष पहचान हैं।

विवाह गीतों में पर्वतीय समाज की परंपराओं, रीति-रिवाजों तथा भावनात्मक संबंधों का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं माना जाता, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव का रूप धारण कर लेता है। लोकगीतों में कन्या-वियोग, पारिवारिक स्नेह तथा सामाजिक मर्यादाओं की अभिव्यक्ति अत्यंत संवेदनशीलता के साथ की गई है।

कृषि-गीतों में श्रम और प्रकृति का सुंदर सामंजस्य दिखाई देता है। खेतों में कार्य करते समय स्त्रियाँ सामूहिक रूप से गीत गाती हैं, जिससे श्रम में उत्साह और सामूहिकता की भावना उत्पन्न होती है। इन गीतों में वर्षा, ऋतुओं तथा प्रकृति के विविध रूपों का अत्यंत काव्यात्मक चित्रण मिलता है।

गढ़वाली लोकगीतों में देवी-देवताओं के प्रति आस्था और धार्मिक चेतना भी प्रमुख रूप से दिखाई देती है। धार्मिक अवसरों पर गाए जाने वाले गीत समाज की आध्यात्मिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। जागर गीतों में लोकदेवताओं की स्तुति तथा लोकविश्वासों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

डॉ. सुरेशचंद्र श्रीवास्तव के अनुसार लोकगीत किसी समाज की सांस्कृतिक स्मृति के सबसे सशक्त माध्यम होते हैं।[4] गढ़वाली लोकगीत इस सांस्कृतिक स्मृति को आज भी जीवित बनाए हुए हैं।

लोककथाओं और लोकगाथाओं में सांस्कृतिक चेतना

गढ़वाली लोककथाएँ और लोकगाथाएँ पर्वतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना का महत्वपूर्ण आधार हैं। इनमें लोकविश्वास, नैतिक मूल्य, धार्मिक आस्थाएँ तथा सामाजिक आदर्शों का चित्रण मिलता है।

[3] मोहन उप्रेती, लोकगीत और लोकजीवन, पृष्ठ 67।

[4] सुरेशचंद्र श्रीवास्तव, भारतीय लोक साहित्य, पृष्ठ 154।

लोककथाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि वे समाज को नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक दिशा भी प्रदान करती हैं।

गढ़वाली लोककथाओं में देवी-देवताओं, वीर नायकों तथा लोकनायकों की कथाएँ प्रमुख रूप से मिलती हैं। इन कथाओं में साहस, त्याग, सत्य और मानवता जैसे मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है। लोकगाथाएँ सामूहिक स्मृति और ऐतिहासिक चेतना का भी प्रतिनिधित्व करती हैं।

लोककथाओं में प्रकृति के साथ मानव संबंध का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। पर्वत, नदी, जंगल और पशु-पक्षी केवल प्राकृतिक तत्व नहीं हैं, बल्कि वे लोकजीवन और लोकविश्वासों का अभिन्न अंग हैं। गढ़वाली लोकमानस प्रकृति को देवतुल्य मानता है, इसलिए लोक साहित्य में प्रकृति के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

गढ़वाली लोकगाथाओं में वीरता और संघर्ष की भावना भी प्रमुख रूप से उपस्थित है। पर्वतीय समाज ने सदैव कठिन परिस्थितियों का सामना किया है और यही संघर्षशीलता लोकगाथाओं में अभिव्यक्त होती है। लोकनायकों की कथाएँ समाज में साहस और आत्मविश्वास की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

डॉ. त्रिलोचन पांडेय के अनुसार लोककथाएँ समाज की सांस्कृतिक चेतना और ऐतिहासिक अनुभवों की जीवंत अभिव्यक्ति होती हैं।[5]

गढ़वाली लोक साहित्य में नारी जीवन

गढ़वाली लोक साहित्य में नारी जीवन का अत्यंत मार्मिक और संवेदनशील चित्रण मिलता है। पर्वतीय समाज में स्त्री परिवार और समाज की प्रमुख आधारशक्ति रही है। वह कृषि कार्य, पशुपालन, घरेलू उत्तरदायित्व तथा सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोकगीतों और लोककथाओं में स्त्री के श्रम, त्याग, प्रेम और संघर्ष को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रवास की समस्या के कारण पर्वतीय समाज में स्त्रियों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पति के दूर चले जाने पर स्त्री अकेले परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाती है। लोकगीतों में उसकी विरह-वेदना, प्रतीक्षा और भावनात्मक संघर्ष का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है।

गढ़वाली लोक साहित्य में स्त्री केवल संवेदना की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह साहस, श्रमशीलता और आत्मनिर्भरता का भी प्रतीक है। पर्वतीय जीवन की कठिन परिस्थितियों में स्त्रियाँ परिवार और समाज को संभालने का कार्य करती हैं। लोक साहित्य ने उनके योगदान को सम्मानपूर्वक अभिव्यक्त किया है।

[5] त्रिलोचन पांडेय, लोक साहित्य के आयाम, पृष्ठ 118।

विवाह और पारिवारिक संबंधों से जुड़े लोकगीतों में स्त्री की भावनाओं और सामाजिक स्थितियों का विस्तृत चित्रण मिलता है। कन्या-वियोग, मातृत्व, पारिवारिक स्नेह तथा सामाजिक मर्यादाओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

डॉ. बसंती बिष्ट के अनुसार गढ़वाली लोकगीतों में स्त्री-जीवन की संवेदनाएँ अत्यंत स्वाभाविक और मार्मिक रूप में अभिव्यक्त हुई हैं।[6]

धार्मिक विश्वास और लोकपरंपराएँ

गढ़वाली लोक साहित्य में धार्मिक विश्वास और लोकपरंपराओं का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। पर्वतीय समाज में देवी-देवताओं के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती है। लोक साहित्य में धार्मिक अनुष्ठानों, मेलों, पर्वों तथा लोकदेवताओं से संबंधित कथाओं और गीतों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

गढ़वाल क्षेत्र में नंदा देवी, महादेव, भैरव तथा स्थानीय लोकदेवताओं की पूजा का विशेष महत्व है। जागर परंपरा धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का प्रमुख अंग है। जागरों में लोकगायक देवी-देवताओं और पूर्वजों का स्मरण करते हुए सामूहिक गायन करते हैं। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामूहिक सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति भी है।

लोक साहित्य में पर्व-त्योहारों का भी विस्तृत चित्रण मिलता है। हरेला, फूलदेई, इगास तथा अन्य पर्व पर्वतीय समाज की सांस्कृतिक एकता और प्रकृति-प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं। इन अवसरों पर गाए जाने वाले गीत समाज की सामूहिक चेतना को सुदृढ़ करते हैं।

गढ़वाली लोक साहित्य में धार्मिकता अंधविश्वास तक सीमित नहीं है, बल्कि वह प्रकृति और मानव जीवन के बीच संतुलन स्थापित करने का माध्यम भी है। लोकविश्वासों के माध्यम से समाज नैतिकता, सहयोग और सामाजिक अनुशासन को बनाए रखने का प्रयास करता है।

डॉ. यशवंत सिंह कठैत के अनुसार उत्तराखंड की लोकपरंपराएँ प्रकृति, धर्म और समाज के संतुलित संबंधों पर आधारित हैं।[7]

आधुनिक संदर्भ और गढ़वाली लोक साहित्य

[6] बसंती बिष्ट, उत्तराखंड के लोकगीत, पृष्ठ 92।

[7] यशवंत सिंह कठैत, उत्तराखंड की सांस्कृतिक परंपराएँ, पृष्ठ 131।

आधुनिक समय में वैश्वीकरण, नगरीकरण और तकनीकी विकास के कारण लोकसंस्कृति के सामने अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। युवा पीढ़ी का महानगरों की ओर पलायन, लोकभाषाओं का घटता प्रयोग तथा आधुनिक जीवन-शैली के प्रभाव के कारण लोक साहित्य की परंपराएँ प्रभावित हो रही हैं।

ऐसे समय में गढ़वाली लोक साहित्य का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। यह साहित्य केवल अतीत की स्मृति नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक मूल्यों की रक्षा का माध्यम भी है। लोक साहित्य समाज को उसकी जड़ों से जोड़ता है तथा सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखता है।

आधुनिक लेखकों और लोककलाकारों ने गढ़वाली लोक साहित्य के संरक्षण और संवर्धन के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है। लोकगीतों और लोककथाओं का संकलन, मंचन तथा प्रकाशन लोकसंस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध हुआ है।

समकालीन संदर्भ में गढ़वाली लोक साहित्य पर्यावरण चेतना, सांस्कृतिक संरक्षण तथा सामाजिक एकता के लिए भी प्रेरणा प्रदान करता है। पर्वतीय समाज और प्रकृति के संबंधों को समझने में यह साहित्य अत्यंत उपयोगी है।

डॉ. शिवप्रसाद डबराल के अनुसार लोक साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक अस्मिता का आधार होता है।[8]

निष्कर्ष

गढ़वाली लोक साहित्य उत्तराखंड की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक जीवन तथा लोकपरंपराओं का महत्वपूर्ण दर्पण है। इसमें पर्वतीय समाज के संघर्ष, श्रम, प्रेम, आस्था और सामूहिक जीवन की सजीव अभिव्यक्ति मिलती है। लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ तथा जागर जैसी विधाओं के माध्यम से गढ़वाली लोक साहित्य ने लोकजीवन और सांस्कृतिक मूल्यों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित किया है।

गढ़वाली लोक साहित्य में प्रकृति-प्रेम, सामूहिकता, नैतिकता तथा मानवीय संवेदनाओं का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इसमें नारी जीवन, प्रवास की समस्या, धार्मिक विश्वास तथा सामाजिक परंपराओं को गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि समाज की सांस्कृतिक स्मृति और लोकचेतना का सशक्त आधार भी है।

आधुनिक समय में लोकसंस्कृति के सामने उत्पन्न चुनौतियों के बीच गढ़वाली लोक साहित्य का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। यह साहित्य सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने के साथ-साथ नई पीढ़ी को

[8] शिवप्रसाद डबराल, गढ़वाल का इतिहास और संस्कृति, पृष्ठ 175।

अपनी परंपराओं और मूल्यों से जोड़ने का कार्य करता है। इसलिए गढ़वाली लोक साहित्य का अध्ययन केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची

1. चातक, गोविंद। गढ़वाली लोक साहित्य। देहरादून: विनसर प्रकाशन, 2012
2. नौटियाल, शिवानंद। उत्तराखंड की लोकसंस्कृति। देहरादून: शैलजा प्रकाशन, 2014
3. उप्रेती, मोहन। लोकगीत और लोकजीवन। नैनीताल: पर्वतीय प्रकाशन, 2011
4. श्रीवास्तव, सुरेशचंद्र। भारतीय लोक साहित्य। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2010
5. पांडेय, त्रिलोचन। लोक साहित्य के आयाम। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2013
6. बिष्ट, बसंती। उत्तराखंड के लोकगीत। देहरादून: हिमालय प्रकाशन, 2015
7. कठैत, यशवंत सिंह। उत्तराखंड की सांस्कृतिक परंपराएँ। देहरादून: विनोद पुस्तक मंदिर, 2016
8. डबराल, शिवप्रसाद। गढ़वाल का इतिहास और संस्कृति। देहरादून: वीर गढ़वाल प्रकाशन, 2009
9. द्विवेदी, हजारीप्रसाद। हिन्दी साहित्य की भूमिका। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2008
10. शर्मा, रामविलास। भारतीय संस्कृति और साहित्य। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2011
11. सिंह, नामवर। इतिहास और आलोचना। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2010
12. राय, गोपाल। हिन्दी साहित्य और समाज। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2012
13. मिश्र, शिवकुमार। लोक साहित्य और संस्कृति। पटना: बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2013
14. वाजपेयी, नंददुलारे। भारतीय लोक संस्कृति। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2011
15. पांडेय, मैनेजर। साहित्य और समाज दृष्टि। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2014